अभिधा शक्ति contd.

① व्याकरण – व्याकरण के आचार्य प्रकृति और प्रत्ययों के योग से शब्दों को निष्पन्न कर उनका अर्थ स्पष्ट करते हैं यथा – दाशरथि (राम) – दशरथस्य अपत्य पुमान्।' 'साधकतमं करणम्।'

② उपमान – समानता अथवा सादृश्य के आधार पर – यथा गौस्तथा गवयः।

③ कोष – शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः (एक शब्द के अनेक शब्द)

④ आप्तवाक्य – ऋषि, ज्ञानियों के द्वारा कहे वचन। यथा – 'अयमश्वपद वाच्य' इस पशु विशेष को अश्व जानो।'

⑤ व्यवहार – लोक व्यवहार में अनुकरण, बच्चे परिवार से स्वतः सीख जाते हैं, प्रत्येक पदार्थ के नाम को वह स्वतः प्रयुक्त करने लगता है।

⑥ वाक्यशेष – ज्ञात शब्द के द्वारा अज्ञात शब्द की जानकारी होना वाक्य शेष कहलाता है –

'वसन्ते सर्वसस्यानां जायते पत्रशातनम्।
मोदमानाश्च तिष्ठन्ति यवाः कणिशशालिनः॥'

यहाँ पर बसन्त में उत्पन्न 'यव' होने पर 'दीर्घशूक' का ग्रहण होता है।

⑦ विवृत्ति – विवृत्ति का अर्थ है व्याख्या, टीका या विवरण, यथा – 'संकेतितार्थस्य बोधनाद् अग्रिमाभिधा' से स्पष्ट संकेत 'अभिधा शक्ति' का ही ग्रहण होता है।

⑧ प्रसिद्ध पद का सान्निध्य – प्रसिद्ध पदों के साथ प्रयुक्त होने पर शब्दों के अर्थ – यथा – मधु के अर्थ है शहद. किन्तु मधुशाला – मयखाना, शराब–

Scanned with CamScanner

धार, मधुकर का अर्थ मधुमक्खी न होकर कमल साथ प्रयुक्त होने पर 'भौंरा'।

यह अभिधा शक्ति तीन प्रकार की होती है - ① रूढ़ि ② यौगिक ③ योगरूढ़ि। इन्हीं को क्रमशः समुदाय शक्ति, अंग शक्ति तथा समुदायावयव शक्ति संकर कहते हैं।

जिन शब्दों का केवल एक ही अर्थ होता है, वह शब्द की अखण्ड शक्ति रूढ़ि कहलाती है - अखण्ड शक्ति मात्रैपेक्षा प्रतिपादकत्वं (प्रतिपादकत्वं) रूढ़िः (अप्पय दीक्षित). यथा - वृत्तिवार्तिक · पृ०-1
वृक्षः, अश्वः।

यौगिक शब्दों में प्रकृति और प्रत्यय का संयोग होता है। इनमें पद की अवयव शक्ति के बिना अर्थ की प्रतीति नहीं हो सकती - 'अवयवशक्ति मात्र सापेक्षं पद सर्वैकार्थ प्रतिपादकत्वं योगः' - (अप्पयदी० वृत्ति, वार्तिक पृ० -2)

योगरूढ़ि अभिधा शब्द शक्ति - इसमें योग तथा रूढ़ दोनों शब्दों का संयुक्त रूप होता है। यथा - गणनायक, पंकज तथा गिरिधर अपना - अपना अर्थ अलग होने पर भी - गणनायक - गणेश, पंकज - कमल तथा गिरिधर - कृष्ण के लिए रूढ़ हो गये हैं। यहाँ एक अर्थ में अवयवशक्ति तथा समुदाय - शक्ति दोनों की ही आवश्यकता होती है - अवयव - समुदायोभय शक्ति सापेक्षयैकार्थं प्रतिपादकत्वं योगरूढ़िः -
अप्पयदीक्षित वृत्ति - वार्तिक पृ० -2

B.A. III Yr.
Uma Pathak
Skt. Deptt.

Scanned with CamScanner